भारत का सम्पूर्ण इतिहास

[विभिन्न बोर्डों के हायर सेकण्डरी एवं विश्वविद्यालयों के प्री० यूनीवर्सिटी एवं टी० डी० सी० परीक्षाओं के स्वीकृत पाठ्यक्रमानुसार]

Manohar Memorial College
LIBRARY
Accession No....1018...
Classification.....
FATEH BAD (HR)

लेखक
डॉ० गोपीनाथ शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०, डी-लिट्०,
रीडर, इतिहास विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

Manohar Memorial College.
Fateh BAD. (Hissar)
HARYANA.

शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी
पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता : आगरा-३

विषय-सूची

अध्याय		पृष्ठ
१	**भौगोलिक अवस्था और देश के इतिहास पर उसका प्रभाव**—प्राकृतिक अवस्था और इतिहास, देश का नाम, स्थिति, सीमाएँ, हिमालय का पर्वतीय प्रदेश, उत्तरी मैदान, दक्षिणी पठार तथा तटीय प्रदेश, समुद्र।	१—८
२	**प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के साधन**—उत्कीर्ण लेख, पुरातत्व, मुद्रा, इतिहास, साहित्य, जनश्रुतियाँ, विदेशी यात्री।	९—१३
३	**प्रागैतिहासिक भारत**—पूर्व प्रस्तर युग, उत्तर-प्रस्तर युग, धातु काल।	१४—१६
४	**सिन्धु घाटी की प्राचीन सभ्यता**—इस सभ्यता से सम्बन्धित जातियाँ, इस सभ्यता के आधार, मोहेन्जोदरो का परिचय, नगर रचना, सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन, धार्मिक जीवन, सिन्धु घाटी की सभ्यता तथा आर्य सभ्यता में अन्तर।	१७—२२
५	**पूर्व वैदिक काल के आर्य और उनकी सभ्यता**—वैदिक काल, वैदिक काल का समय, आर्य, आर्यों का आदि निवास-स्थान, मध्य-एशिया सम्बन्धी मत, यूराल पहाड़ सम्बन्धी मत, यूरोप के स्टेपीज सम्बन्धी मत, भारतीय मत, आर्य और ध्रुव प्रदेश, आर्यों का विस्तार, आर्यों के विस्तार में संघर्ष, आर्यों की सभ्यता, सामाजिक व्यवस्था, राजनीतिक अवस्था, आर्थिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था, वैदिक साहित्य।	२३—३३
६	**उत्तर-वैदिक काल और आर्य सभ्यता**—राजनीतिक जीवन, सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन, धार्मिक अवस्था, साहित्य।	३४—३६
७	**महाकाव्य-काल और जन-जीवन**—रामायण तथा उसका काल निर्णय, रामायण की ऐतिहासिकता, महाभारत और उसका काल निर्णय, महाभारत की ऐतिहासिकता, सामाजिक व्यवस्था, राजनीतिक अवस्था, धार्मिक अवस्था, आर्थिक जीवन, साहित्य।	३७—४१

८—**नवीन धार्मिक आन्दोलन**—धार्मिक आन्दोलन की व्याख्या, जैन-धर्म, महावीर, महावीर के सिद्धान्त तथा उपदेश, जैन-धर्म का प्रचार, जैन-धर्म की एक देशीयता, बौद्ध-धर्म, गौतम बुद्ध, बुद्ध के उपदेश, बौद्ध-धर्म की व्यापकता, बौद्ध-धर्म का स्वरूप, बौद्ध और जैन-धर्म का सम्बन्ध, बौद्ध-धर्म का पतन। ४२—५२

९—**बौद्धकालीन भारत**—समाज-व्यवस्था, आर्थिक स्थिति, धार्मिक स्थिति, साहित्य और जन-जीवन, कला और उन्नति। ५३—५७

१०—**प्राचीनकालीन यवन आक्रमण**—यवनों के पूर्व भारत की राजनीतिक व्यवस्था, ईरानी आक्रमण, ईरानी आक्रमण का भारत पर प्रभाव, यूनानी आक्रमण, सिकन्दर और पुरु, यूनानी आधिपत्य का पतन, सिकन्दर के आक्रमण का परिणाम। ५८—६३

११—**मगध राज्य का विकास और मौर्य शासन तथा समाज** (३२१ ई० पू०—१२४ ई० पू०)—मौर्य वंश, मौर्य वंश की स्थापना, चन्द्रगुप्त का साम्राज्य, चन्द्रगुप्त और यूनानी आतंक, चन्द्रगुप्त के अन्तिम दिन, चन्द्रगुप्तकालीन शासन-व्यवस्था और उसके जानने के आधार, केन्द्रीय शासन, प्रान्तीय शासन-व्यवस्था, शासन-व्यवस्था का व्यवहारिक रूप, आर्थिक व्यवस्था, न्याय-व्यवस्था, रक्षा की व्यवस्था, अन्य लोकोपयोगी शासन-व्यवस्था, बिन्दुसार, राज्यारोहण, विजय-नीति, उत्तरापथ का विद्रोह, विदेशी नीति, बिन्दुसार की मृत्यु, अशोक महान्, राज्यारोहण, अशोक की भौतिक विजय, कलिंग विजय का महत्त्व, अशोक और धर्म-विजय, अशोक और सुधार, अशोक के शिलालेख, अशोक के अन्य निर्माण कार्य, अशोक का व्यवहारिक धर्म, अशोक का धर्म-प्रचार अशोक की महानता, अशोक का व्यक्तित्व, अशोक की मृत्यु और उत्तराधिकारी, मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण। ६४—८४

१२—**विदेशी आक्रमण और भारत पर प्रभाव**—यूनानी विजय, शकों का प्रभुत्व, पार्थियन, कुशान वंश, कुजुल कदफिस, विमाकदफिस, कनिष्क, कनिष्क के साम्राज्य का पतन, इन आक्रमणों का भारतीय इतिहास पर प्रभाव। ८५—९१

१३—**गुप्त काल के पूर्व का भारत**—ब्राह्मण साम्राज्यों का उदय व पतन, शुंग वंश, पुष्यमित्र की विजय और नीति, पुष्य-मित्र के उत्तराधिकारी, शुंगकालीन समाज, काण्व वंश, ९२—९६

आन्ध्र वंश, गौतमी पुत्र शातकर्णी, गौतमी पुत्र शातकर्णी के उत्तराधिकारी, आन्ध्रकालीन संस्कृति, राजनीतिक जीवन, सामाजिक अवस्था, आर्थिक जीवन, धार्मिक जीवन, साहित्य तथा कला, ब्राह्मण साम्राज्य के पतन के कारण।

१४—**गुप्त साम्राज्य तथा समाज**—गुप्तवंश, गुप्तवंश का संस्थापक, चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, उसकी विजय, अश्वमेध यज्ञ, समुद्रगुप्त का व्यक्तित्व, चन्द्रगुप्त द्वितीय, विजय, शासन, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का इतिहास में स्थान, गुप्तवंशीय अन्य शासक, गुप्त साम्राज्य के पतन के कारण, गुप्तकालीन शासन-व्यवस्था, जानकारी के साधन, केन्द्रीय शासन, मन्त्रिमण्डल, प्रान्तीय शासन, आर्थिक शासन-व्यवस्था, न्याय-व्यवस्था, आन्तरिक रक्षा-व्यवस्था, आभ्यन्तरिक रक्षा, जनहित साधन-व्यवस्था, गुप्त तथा मौर्य शासन-व्यवस्था की तुलना, गुप्तकालीन समाज और संस्कृति, सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन, धार्मिक जीवन, साहित्योन्नति, कला का प्रवर्तन, विदेशों पर भारतीय प्रभाव, फाहियान और भारत। ९७—११०

१५—**गुप्त साम्राज्य के पतन का भारत और कन्नौज के साम्राज्य का उदय**—हर्ष के पूर्व का भारत, हूणों के आक्रमण, वल्लभि, मालव राज्य, गौड़वंश, पुष्यभूति वंश और हर्ष, हर्ष और कन्नौज राज्य, हर्ष और विजय, हर्षकालीन शासन, केन्द्रीय शासन, प्रान्तीय शासन, अर्थ विभाग और शासन, न्याय व्यवस्था, सैनिक विभाग की व्यवस्था, आन्तरिक रक्षा व्यवस्था, राज्य के सार्वजनिक हित की रक्षा की व्यवस्था, हर्ष की धार्मिक नीति, हर्ष और विद्यानुराग, हर्ष की मृत्यु, हर्षकालीन भारत, सामाजिक स्थिति, धार्मिक अवस्था, विद्या और कला, हुएनसांग। १११—१२०

१६—**राजपूत काल और समाज**—इस काल की पृष्ठभूमि, राजपूतों की उत्पत्ति, राजपूत राज्य, कन्नौज राज्य, अजमेर और दिल्ली के राज्य, मालवा का राज्य, मेवाड़ राज्य, उत्तरी भारत के अन्य राजपूत राज्य, दक्षिण के राज्य, चालुक्य राज्य, राष्ट्र कूट, काञ्ची राज्य, राजपूत युग की सभ्यता, इसका राजनीतिक और सैनिक जीवन, सामाजिक जीवन, कला और साहित्य का विकास, धार्मिक जीवन, राजपूतों का पतन। १२१—

१७—**चोल राज्य एवं दक्षिण के राज्य और उनका समाज तथा संस्कृति**—प्राक्कथन, चोल वंश, चोलों का शासन प्रबन्ध, केन्द्रीय शासन और प्रान्तीय विभाग, स्थानीय शासन, राजस्व विभाग, सैन्य-संगठन, धार्मिक नीति, चोल-कला, अन्य राज्यों का राजनीतिक जीवन, सामाजिक व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था, साहित्य, कला, धार्मिक जीवन। १३१—१३७

१८—**भारत और विदेश**—भारत और विदेश, पूर्व ऐतिहासिक काल में, मौर्य काल और विदेश, भारत और यूनान तथा रोम भारत और चीन, फाहियान, हुएनसांग, अन्य चीनी यात्री, भारतीय चीन में, भारतीय तथा चीनी सम्पर्क का महत्त्व, कोरिया और जापान तथा बौद्ध-धर्म, तिब्बत और भारत, भारत तथा अफगानिस्तान और फारस, भारत तथा दक्षिणी-पूर्वी देश, चम्पा, कम्बुज, स्याम, मलय राज्य, भारत, जावा, बाली और बोर्नियो, उपनिवेशों में हिन्दू-धर्म और संस्कृति के प्रचार और पतन के कारण। १३८—१४६

१९—**प्राचीन काल के भारतीय जीवन का सिंहावलोकन** (१००० ई०)—राजनीतिक अवस्था, आर्थिक स्थिति, सामाजिक अवस्था, धार्मिक अवस्था, साहित्य और कला। १४७—१५०

मध्यकालीन भारत का इतिहास

२०—**मध्यकालीन इतिहास और उसकी विशेषताएँ**—इतिहास का विभाजन, मध्यकाल का निर्णय, ऐतिहासिक विशेषताएँ, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि। १५१—१५३

२१—**मध्यकालीन इतिहास के जानने के साधन**—पृष्ठभूमि, ऐतिहासिक ग्रन्थ, साहित्यिक तथा नैतिक ग्रन्थ, मुद्रा तथा अभिलेख, स्थापत्य यात्रियों के विवरण। १५४—१५७

२२—**इस्लाम का उदय**—अरब जाति, मुहम्मद साहब और इस्लाम, मुहम्मद साहब की शिक्षाएँ, इस्लाम-धर्म का प्रचार। १५८—१६०

२३—**अरब और भारत**—अरब और भारत का प्राचीन सम्बन्ध, सिन्ध पर अरब आक्रमण के समय भारत की स्थिति, राजनीतिक अवस्था, शासन व्यवस्था, सामाजिक व सांस्कृतिक अवस्था, अरब और सिन्ध आक्रमण के कारण, सिन्ध विजय और घटनायें, अरबों की सफलता के कारण, सिंध में अरब शासन, अरब शासन की असफलता, अरब विजय का मूल्यांकन। १६१—१७१

२४—**तुर्कों की शक्ति का उदय और उनके द्वारा भारत में इस्लाम का प्रवेश**—प्रारम्भिक परिचय, गजनी की तुर्क सत्ता और भारत, महमूद, महमूद गजनवी के आक्रमण के समय भारत की स्थिति, राजनीतिक अवस्था, आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, महमूद के भारतीय आक्रमणों का संक्षिप्त विवरण, महमूद की सफलता के कारण, महमूद के आक्रमणों का प्रभाव, महमूद का चरित्र। १७२—१८१

२५—**तुर्क साम्राज्य की स्थापना और मुहम्मद गोरी**—गोरवंश का उत्कर्ष, मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक स्थिति, मुहम्मद गोरी के भारतीय आक्रमण के कारण, मुहम्मद की भारतीय विजय, मुसलमानों की विजय के कारण, मुहम्मद का चरित्र, महमूद गजनवी तथा मुहम्मद गोरी के चरित्र की तुलना। १८२—१८९

२६—**तथाकथित दास वंश**—कुतुबुद्दीन ऐबक, प्राक्कथन, कुतुबुद्दीन ऐबक का प्रारम्भिक जीवन, ऐबक की कठिनाइयाँ और उसकी नीति, कुतुबुद्दीन के कार्यों का मूल्यांकन, इल्तुतमिश, इल्तुतमिश की कठिनाइयाँ और विजय नीति, इल्तुतमिश की शासन नीति, उनके चरित्र और कार्यों का मूल्यांकन, रजिया बेगम, रजिया का व्यक्तित्व, इस वंश के अन्य शासक, बलबन, बलबन का मन्त्रिमण्डल, बलबन और मेवाती, बलबन का सुल्तान बनना, बलबन और सरदार, बलबन और मंगोल बलबन का राज्य-प्रबन्ध, बलबन का व्यक्तित्व, बलबन के उत्तराधिकारी और गुलाम वंश का पतन। १९०—२०३

२७—**खिलजी वंश का उत्सर्ग और पतन**—जलालुद्दीन, अलाउद्दीन खिलजी, अलाउद्दीन की नीति और सुधार, धार्मिक दल और सुल्तान, सामाजिक सुधार, गुप्तचर व्यवस्था, न्याय-व्यवस्था, सैनिक सुधार, आर्थिक प्रबन्ध, इस व्यवस्था की सफलता, इस व्यवस्था के दोष, भूमि-कर व्यवस्था, साम्राज्य विस्तार नीति, अलाउद्दीन की उत्तर और दक्षिण विजयें, अलाउद्दीन की मृत्यु, अलाउद्दीन का मूल्यांकन, खिलजी वंश के पतन के कारण। २०४—२१९

२८—**तुगलक वंश का उत्थान और पतन**—गाजी मलिक, गयासुद्दीन की मृत्यु, मुहम्मद तुगलक, राजधानी का बदलना, दोआब में कर-वृद्धि, मुद्रा-नीति, सुल्तान की विजयें, सुल्तान २२०—२३१

के शासन और विजय पर एक दृष्टि, मुहम्मद बिन तुगलक का व्यक्तित्व, मुहम्मद तुगलक तथा अलाउद्दीन की तुलना। सुल्तान फीरोज, सुल्तान की वैदेशिक नीति, फीरोज की शासन नीति, फीरोज के सार्वजनिक हित के कार्य, फीरोज का चरित्र और व्यक्तित्व।

२९—तुगलकों का अन्त और राजनीतिक विशृंखलता—तुगलकों का अन्त, तैमूर का आक्रमण, तैमूर के लौटने के बाद भारत की स्थिति, तुगलक वंश के पतन के कारण। २३२—२३७

३०—सैय्यद वंश—खिज्रखाँ, मुबारकशाह, मुहम्मदशाह, अलाउद्दीन आलमशाह। २३८—२४०

३१—लोदी वंश—बहलोल लोदी, सिकन्दर लोदी, इब्राहीम लोदी, सुल्तानकालीन साम्राज्य के अन्त के कारण। २४१—२४७

३२—प्रान्तीय-राज्य—बंगाल, मालवा, गुजरात, जोनपुर मेवाड़, बहमनी राज्य, विजयनगर राज्य, विजयनगर का शासन प्रबन्ध, विजयनगर राज्य का जन-जीवन। २४८—२५४

३३—सल्तनत-कालीन शासन-व्यवस्था—शासन के आधार, सुल्तान पद, मन्त्रीगण, सेना का संगठन, आर्थिक व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, प्रान्तीय शासन। २५५—२५८

३४—सल्तनतकालीन उत्तर-पश्चिमी सीमा-नीति, तुर्क और मंगोल आक्रमण—प्राक्कथन, मंगोलों का परिचय, इल्तुतमिश और मंगोल, बहराम शाह और मंगोल, मसूद और मंगोल, नासिरुद्दीन महमूद और मंगोल, बलबल और मंगोल, जलालुद्दीन खिलजी और मंगोल, अलाउद्दीन और मंगोल, मुहम्मद तुगलक और मंगोल, मंगोल आक्रमण के प्रभाव। २५९—२६३

३५—तुर्क और राजपूत शक्ति—प्राक्कथन, महमूद और राजपूत राज्य, मुहम्मद गोरी और राजपूत, कुतुबुद्दीन ऐबक और राजपूत राज्य, इल्तुतमिश और राजपूत, नासिरुद्दीन और राजपूत, बलबन और राजपूत, जलालुद्दीन खिलजी और राजपूत, अलाउद्दीन और राजपूत, मुहम्मद तुगलक और राजपूत, फीरोज और राजपूत, सैयद वंशीय सुल्तान और राजपूत, बहलोल लोदी और राजपूत, सिकन्दर लोदी और राजपूत, इब्राहीम और राजपूत। २६४—२७०

३६—तुर्क साम्राज्य और दक्षिण—प्राक्कथन, अलाउद्दीन और दक्षिण, मुहम्मद तुगलक और दक्षिण, दक्षिण विजय के परिणाम। २७१—२७४

३७—पूर्व मध्यकालीन समाज और संस्कृति—मुस्लिम समाज, हिन्दू-समाज, आर्थिक स्थिति, धार्मिक स्थिति, साहित्य, कला। २७५—२७९

३८—हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति का समन्वय—समन्वय की व्याख्या, सामाजिक समन्वय, धार्मिक समन्वय, भक्ति आन्दोलन, रामानन्द, कबीर, नानक, वल्लभाचार्य, चैतन्य और ज्ञानेश्वर, इस काल के मुस्लिम सन्त, साहित्य का समन्वय, कला का समन्वय। २८०—२८६

३९—१५२६ ई० में भारत की दशा—राजनीतिक अवस्था—दिल्ली का राज्य, बंगाल, गुजरात, मालवा, मेवाड़, दक्षिण के राज्य, सामाजिक और सांस्कृतिक अवस्था। २८७—२८९

४०—बाबर—प्रारम्भिक जीवन, भारत और बाबर के प्रारम्भिक आक्रमण, पानीपत का युद्ध, युद्ध के परिणाम, बाबर की सफलता के कारण। पानीपत के युद्ध के बाद बाबर की स्थिति, खानवा का युद्ध, बाबर का चरित्र और व्यक्तित्व। २९०—२९७

४१—हुमायूँ—प्रारम्भिक जीवन, उसकी कठिनाइयाँ, हुमायूँ की नीति और उसके परिणाम, हुमायूँ और बहादुरशाह, शेरखाँ और हुमायूँ, बिलग्राम की लड़ाई, हुमायूँ के राज्य सिंहासन छोड़ने के कारण, हुमायूँ और उसका निर्वासन काल, हुमायूँ द्वारा पुनः भारत विजय और उसकी मृत्यु, हुमायूँ का व्यक्तित्व। २९८—३०६

४२—शेरशाह सूर और उसके उत्तराधिकारी—शेरशाह का प्रारम्भिक जीवन, फरीद और सत्ता की अभिवृद्धि, हुमायूँ और शेरखाँ, शेरशाह की अन्य विजयें, शेरशाह के शासन-सुधार, शेरशाह का चरित्र, शेरशाह के उत्तराधिकारी। ३०७—३१६

४३—अकबर—प्रारम्भिक जीवन, अकबर का राज्याभिषेक, अकबर की प्रारम्भिक कठिनाइयाँ, बैरमखाँ का संरक्षण और पतन, अकबर और साम्राज्यवादी नीति, अकबर और उत्तरी भारत और दक्षिण-विजय, राजपूत और अकबर, अकबर की धार्मिक नीति, दीन इलाही, अकबर का शासन प्रबन्ध, अकबर का व्यक्तित्व और चरित्र। ३१७—३३२

४४—जहाँगीर—प्रारम्भिक जीवन, खुसरो का विद्रोह, नूरजहाँ, जहाँगीर के समय के युद्ध, दक्षिण का युद्ध, खुर्रम का विद्रोह, महाबतखाँ का विप्लव, जहाँगीर का व्यक्तित्व। ३३३—३४०

४५—शाहजहाँ—प्रारम्भिक जीवन, खानजहाँ लोधी का विद्रोह, बुन्देलखण्ड में विद्रोह, शाहजहाँ और दक्षिण, शाहजहाँ और उसकी मध्य-एशियाई नीति, उत्तराधिकार के लिए संघर्ष, शाहजहाँ का व्यक्तित्व और चरित्र । ३४१—३४८

४६—औरंगजेब—प्रारम्भिक जीवन, औरंगजेब की शासन नीति, जाटों का विद्रोह, सतनामियों का विद्रोह, औरंगजेब और सिखों का विरोध, औरंगजेब और राजपूत, औरंगजेब और मराठा, औरंगजेब और दक्षिण के राज्य, मराठों का परिचय—शिवाजी, शिवाजी और अफजल खाँ, शिवाजी और शाइस्तखाँ, जयसिंह और शिवाजी, शिवाजी और आगरा, शिवाजी का राज्याभिषेक, शिवाजी और शासन प्रबन्ध, शिवाजी का चरित्र, शम्भाजी, राजाराम, शिवाजी द्वितीय और ताराबाई, औरंगजेब के अन्तिम दिन और चरित्र । ३४९—३६५

४७—उत्तर-कालीन मुगल सम्राट—बहादुरशाह, जहाँदार शाह फरुखसियर, मुहम्मद शाह, मुगल साम्राज्य के पतन के कारण । ३६६—३७०

४८—पेशवा और मराठा उत्कर्ष—शाहू, बालाजी विश्वनाथ, बाजीराव, बालाजी बाजीराव, पानीपत का तीसरा युद्ध, मराठा पराजय के कारण, बालाजी बाजीराव का चरित्र । ३७१—३७८

४९—सिक्खों का उत्थान और उत्कर्ष—गुरु अर्जुन, हरगोविन्द, गुरु तेगबहादुर, गुरु गोविन्दसिंह, बन्दा । ३७९—३८२

५०—मुगलों की धार्मिक नीति—बाबर तथा हुमायूँ की धार्मिक नीति, अकबर की धार्मिक नीति, जहाँगीर की धार्मिक नीति, शाहजहाँ की धार्मिक नीति, औरंगजेब की धार्मिक नीति । ३८३—३८६

५१—मुगल-राजपूत सम्बन्ध—मुगल राजपूत सम्बन्ध का प्रारम्भिक काल, अकबर और राजपूत, जहाँगीर और शाहजहाँ और राजपूत, औरंगजेब और राजपूत । ३८७—३९०

५२—मुगलों की दक्षिण नीति—अकबर और दक्षिण, जहाँगीर और दक्षिण, औरंगजेब और दक्षिण । ३९१—३९४

५३—मुगलों की उत्तर-पश्चिम-सीमा प्रान्त तथा मध्य एशियाई नीति—नीति की समीक्षा, बाबर और सीमान्त नीति, अकबर और शाहजहाँ, औरंगजेब और उत्तर-पश्चिम-सीमा प्रान्त की नीति, मुगल और मध्य-एशियाई नीति । ३९५—३९८

५४—मुगलकालीन शासन-व्यवस्था—सम्राट, मन्त्री, प्रान्तीय शासन, जिला शासन, परगने का शासन, गाँव का शासन, भूमि-कर व्यवस्था, सैन्य संगठन, न्याय-व्यवस्था । ३९९—४०५

५५—मुगलकालीन समाज और संस्कृति—समाज, रहन-सहन, उत्सव, मनोरंजन, धार्मिक जीवन, आर्थिक स्थिति, शिक्षा और साहित्य, फारसी, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, चित्रकला, संगीत, स्थापत्य कला । ४०६—४१७

वर्तमान कालीन भारत का इतिहास

५६—यूरोप निवासियों का भारत प्रवेश—पुर्तगाल और भारत, साम्राज्य विस्तार, पुर्तगालियों के पतन के कारण, डच और भारतवर्ष, अंग्रेजों और फ्रांसीसियों का भारत में आना । ४१८—४२५

५७—अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के युद्ध १७४४-१७६३ ई०—प्रथम कर्नाटक युद्ध, युद्ध के परिणाम, डूप्ले का प्रारम्भिक जीवन, उसकी नीति, द्वितीय कर्नाटक युद्ध, द्वितीय कर्नाटक युद्ध का महत्त्व, तृतीय कर्नाटक युद्ध, फ्रांसीसियों के हार के कारण । ४२६—४३३

५८—बंगाल में अंग्रेजी राज्य की स्थापना—सिराजुद्दौला और अंग्रेज, प्लासी की लड़ाई, प्लासी की लड़ाई का परिणाम और महत्त्व, बक्सर की लड़ाई, इलाहाबाद की सन्धि, बक्सर के युद्ध का महत्त्व, रावर्ट क्लाइव । ४३४—४४१

५९—मैसूर के युद्ध (१७६७-१७९९ ई०)—हैदरअली और अंग्रेज, प्रथम मैसूर युद्ध, द्वितीय मैसूर युद्ध, मैसूर की तीसरी लड़ाई, मैसूर की चौथी लड़ाई, युद्धों के परिणाम, हैदरअली का व्यक्तित्व, टीपू सुलतान का व्यक्तित्व । ४४२—४४७

६०—अंग्रेजों और मराठों का युद्ध—मराठों की पहली लड़ाई, मराठों की दूसरी लड़ाई, मराठों की तीसरी लड़ाई, मराठों की चौथी लड़ाई, मराठों के हार के कारण । ४४८—४६१

६१—पंजाब पर अंग्रेजी अधिकार—सिक्खों का बल और अंग्रेज, रणजीतसिंह का उत्कर्ष, उसका शासन प्रबन्ध, प्रथम सिक्ख युद्ध, सिक्खों का दूसरा युद्ध । ४५३—४५६

६२—ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रशासन और गवर्नर जनरलों के समय शासन व सुधारों की प्रगति—प्राक्कथन, क्लाइव की प्रारम्भिक शासन नीति, वारेन हेस्टिंग्ज, शासन प्रबन्ध, रेगुलेटिंग एक्ट, पिट्स इण्डिया एक्ट, नन्दकुमार को फाँसी, ४५७—४७३

चेतसिंह के साथ व्यवहार, अवध की बेगमों के साथ व्यवहार, लॉर्ड कार्नवालिस के सुधार, इस्तमरारी बन्दोबस्त, लार्ड वैलेजली, उसकी नीति, लार्ड हेस्टिंग्ज, लार्ड विलियम बेण्टिक और सुधार, शासन की प्रगति १८३६-१८४७ ई०, लार्ड डलहौजी की नीति और शासन, गोद लेने की प्रथा को बन्द करना, आन्तरिक सुधार।

६३—**भारतीय गदर**—प्राक्कथन, गदर के राजनीतिक कारण, धार्मिक कारण, सैनिक कारण, गदर का प्रारम्भ, विद्रोह का दमन, विद्रोह की सफलता के कारण, अंग्रेजों की सफलता के कारण, विद्रोह के प्रभाव। ४७४—४७६

६४—**वाइसराय-कालीन शासन व सुधार**—लार्ड केनिंग, इण्डिया कौंसिल एक्ट १८६१ ई०, लॉर्ड लारेंस, लार्ड मेओ, लार्ड नार्थब्रुक, लॉर्ड लिटन, लॉर्ड रिपन, स्थानीय स्वशासन, लॉर्ड लेंसडाउन, लॉर्ड कर्जन। ४८०—४८४

६५—**उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रान्तीय नीति और अफगान युद्ध**—प्राक्कथन, पहला आंग्ल-अफगान युद्ध, परिणाम, अफगानी नीति का दूसरा पहलू, दूसरा आँग्ल-अफगान युद्ध, सीमान्त नीति १८८१ से १९१९ ई०। तीसरा आंग्ल-अफगान युद्ध १९१९ ई०, १९१९ से १९४७ ई० तक की सीमान्त नीति। ४८५—४९०

६६—**भारत में नव जागृति**—धार्मिक तथा सामाजिक आन्दोलन, प्राक्कथन, राजा राममोहन राय तथा ब्रह्म-समाज, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसाइटी, मुसलमानों का धार्मिक तथा सामाजिक आन्दोलन, अन्य सामाजिक संस्थाएँ। ४९१—४९६

६७—**ब्रिटिशकालीन शिक्षा**—कम्पनी-कालीन, हेस्टिंग्ज और शिक्षा, माध्यमिक, यूनीवर्सिटी और प्राथमिक शिक्षा। ४९७—४९९

६८—**ब्रिटिश भारत और सामाजिक सुधार**—शिशु हत्या, सती प्रथा की रोक, विवाह सम्बन्धी सुधार, बालविवाह, विधवा विवाह, बहु-विवाह, पर्दा-प्रथा, जाति-प्रथा के अन्त के प्रयत्न तथा दलितवर्ग। ५००—५०२

६९—**भारत का आर्थिक विकास**—प्राक्कथन, खेती, हस्तकला और कपड़े का व्यापार, व्यापार, व्यवसाय तथा यातायात, अकाल और भूकम्प, रोगों का प्रतिकार, दूसरे महासमर का आर्थिक परिमाण। ५०३—५०६

७०—**भारत में राष्ट्रीयता का विकास**—हमारी मौलिक एकता, राष्ट्रीय जागृति के कारण, इण्डियन नेशनल कांग्रेस, कांग्रेस की नीति में परिवर्तन, १९०९ ई० का सुधार, १९१९ ई० का सुधार, महात्माजी का असहयोग आन्दोलन, साइमन कमीशन और गोलमेज सभाएँ, १९३५ ई० का एक्ट, क्रिप्स प्रस्ताव, १९४३ से १९४७ ई० का राष्ट्रीय आन्दोलन। ५०७—५१३

७१—**स्वतन्त्र भारत—भारत का एकीकरण और देश की प्रमुख समस्याएँ**—स्वतन्त्र भारत, भारतीय एकीकरण के काल की कुछ समस्याएँ, शरणार्थी, देशी राज्य, जूनागढ़, कश्मीर, हैदराबाद, अन्य देशी राज्य, देश की आधुनिक समस्याएँ और हमारी सरकार की नीति सामाजिक समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ। ५१४—५१९

७२—**महात्मा गांधी और उनके उपदेश**—प्रारम्भिक जीवन और शिक्षा, गांधी जी अफ्रीका में, भारत में गांधी जी और सत्याग्रह, गांधीजी और असहयोग आन्दोलन, गांधीजी के उपदेश। ५२०—५२७